|| Shree Ganeshaya Namaha ||

Sample PDF Reports

Kundali Veda

kundaliveda.com

Your Astrology Partner

उपाय

ज्योतिष में नौ ग्रह हैं, जिनकी अपनी अलग-अलग प्रकृति है। ये ग्रह हमारी राशि के अनुसार हमें कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक परिणाम देते हैं। ग्रहों के नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए ज्योतिषीय उपाय का बड़ा महत्व है। ऐसा करने पर न केवल ग्रहों के बुरे प्रभाव दूर होते हैं बल्कि जातक को ग्रहों से शुभ फल भी प्राप्त होते हैं। यदि आप बीमार पड़ते हैं तो चिकित्सक के पास जाते हैं। अब चिकित्सक आपके रोग को पहचानने के लिए पहले जाँच-पड़ताल करता है और उसके बाद वह आपको दवा देता है ताकि आप रोग मुक्त हो सकें। ठीक उसी प्रकार एक ज्योतिषी आपकी जन्म कुंडली को देखकर आपकी समस्या का निदान हेतु आपको उन ग्रहों से संबंधित उपाय करने की सलाह देता है। जब आप उन उपायों को करते हैं तब जाकर आपकी समस्याओं का निदान होता है।

आपके लिए

वेश-भूषा एवं जीवन शैली

चमकदार सफेद एवं गुलाबी

व्रत

शुक्रवार

सुबह के लिए प्रार्थना

माँ लक्ष्मी/ जगदम्बे माँ /भगवान परशुराम

दान

दही, खीर, ज्वार, इत्र, रंग-बिरंगे कपड़े, चांदी, चावल इत्यादि।

मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

वेश-भूषा एवं जीवन शैली

हमारे जीवन में बड़े ही विचित्र रूप से ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। जब हमारे जीवन में किसी विशेष ग्रह की दशा की शुरुआत होती है तो हमारे आसपास उस ग्रह से संबंधित घटनाएँ घटने लगती हैं। प्रत्येक ग्रह का किसी न किसी रंग/वस्तुओं से संबंध होता है। ज्योतिष के अनुसार यदि कोई ग्रह आपके लिए शुभ फलदायी है तो आपको उस ग्रह से संबंधित वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए परंतु यदि वह ग्रह आपके लिए कष्टकारी है तो आपको उस ग्रह से संबंधित चीज़ों से परहेज़ अथवा उन्हे दान करना चाहिए।

यहाँ ग्रह एवं उनसे संबंधित रंग तथा क्रियाओं को बताया जा रहा हैः -

- चमकदार सफेद एवं गुलाबी रंग का प्रयोग करें।
- प्रियतम एवं अन्य महिलाओं का सम्मान करें। यदि आप पुरुष हैं तो अपनी पत्नी का आदर करें।
- कलात्मक क्रियाओं का विकास करें।
- चरित्रवान बनें।

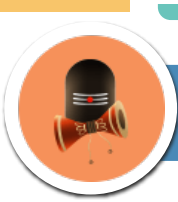

व्रत

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से व्रत धारण कर हम अपने ईश्वर की उपासना करते हैं। जबकि वैज्ञानिक दृष्टि से भी उपवास रखना हमारे स्वस्थ्य शरीर के लिए बहुत अच्छा है। इससे हमारे शरीर का आतंरिक एवं बाह्य भाग शुद्ध होता है। इसके अलावा यह हमारी इच्छा शक्ति को भी मजबूत बनाता है। जीवन को स्वस्थ्य बनाने एवं ग्रहों का आशीर्वाद पाने हेतु यहाँ ग्रहों से संबंधित व्रत धारण करने का दिन बताया जा रहा है:-

- शुक्र ग्रह का शुभ आशीष पाने के लिए शुक्रवार के दिन उपवास रखें।

सुबह के लिए प्रार्थना

ईश्वर से आत्मीय संपर्क बनाने के लिए प्रार्थना को सबसे बेहतर माध्यम माना गया है। प्रार्थना में हम भगवान से अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों से लड़ने के लिए साहस एवं शक्ति अथवा इच्छापूर्ति के लिए कामना करते हैं। हिन्दू धर्म में प्रत्येक ग्रह को ईश्वर के स्वरूप माना गया है इसलिए किसी विशेष ग्रह से शुभ फल पाने के लिए हम उससे संबंधित देवी/देवताओं की प्रार्थना करते हैं।

- माँ लक्ष्मी अथवा जगदम्बे माँ की पूजा करें।
- भगवान परशुराम की आराधना करें।
- श्री सूक्त का पाठ करें।

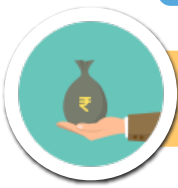

दान

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए दान करना शुभ माना जाता है। हालाँकि दान करते समय मन में किसी बात का लालच नहीं रहना चाहिए और पूरी श्रद्धा के साथ दान की प्रक्रिया पूर्ण की जानी चाहिए। ध्यान रखें, दान हमेशा ज़रुरतमंद लोगों को करें। ज्योतिष के अनुसार जिस ग्रह से संबंधित आप दान कर रहे हैं उस ग्रह से आपको शुभ परिणामों की प्राप्ति होगी और यदि उस ग्रह से आपको कष्टकारी परिणाम मिल रहे हैं तो उससे संबंधित चीज़ें दान करने से आपके कष्ट दूर हो जाएंगे। यहाँ नीचे ग्रह एवं उनसे संबंधित दान की जाने वस्तुओं एवं दान विधि बतायी जा रही है:-

- शुक्र ग्रह से संबंधित वस्तुओं को शुक्रवार के दिन शुक्र की होरा एवं इसके नक्षत्रों (भरानी, पूर्व फाल्गुनी, पूर्व षाढ़ा) के समय दान करना चाहिए।
- दान करने वाली वस्तुएँ- दही, खीर, ज्वार, इत्र, रंग-बिरंगे कपड़े, चांदी, चावल इत्यादि।

मंत्र

प्राचीन काल से ही वैदिक ज्योतिष में मंत्रों का बड़ा महत्व है। मंत्र का सही उच्चारण करने पर वातावरण में एक प्रकार की सकारात्मक ऊर्जा बहती है। यदि जातक किसी विशेष ग्रह अथवा देवी, देवताओं से संबंधित मंत्र का जाप करता है तो उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

- शुक्र ग्रह को प्रसन्न करने के लिए आपको शुक्र बीज मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। मंत्र- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
- इस मंत्र को कम से कम 16000 बार उच्चारण करना चाहिए और देश-काल-पात्र सिद्धांत के अनुसार कलयुग में इस मंत्र को 64000 बार जपने के लिए कहा गया है।
- आप इस मंत्र का भी जाप कर सकते हैं - ॐ शुं शुक्राय नमः।

इष्ट देवता

इष्ट देवता की पूजा सफलता व मोक्ष दिलाती है। आपकी कुंडली के अनुसार **भगवान ब्रह्मा और अय्यप्पा** आपके इष्ट देवता हैं।

भगवान ब्रह्मा और अय्यप्पा

इष्ट देवता: आवश्यकता एवं महत्व

मोक्ष की अवधारणा जन्म और मृत्यु से जुड़ी हुई है। वैदिक ज्योतिष हर व्यक्ति के जीवन में मोक्ष को सर्वोच्च लक्ष्य की तरह परिभाषित करता है। हमारे इष्ट देवता या जिस भी देवता की हम पूजा करते हैं वो हमें हमारे वास्तविक उद्देश्य यानि मोक्ष प्राप्ति में हमारी सहायता करते हैं और मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। इष्ट देवता शाब्दिक रुप में उस देवता को कहा जाता है जिनकी हम पूजा करते हैं और जो सर्वशक्तिमान हैं, आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए हम अपने इष्ट देव से जुड़े रहते हैं। इष्ट देव जीवन के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करते हैं, इसके साथ ही वह हमें संरक्षित और पूर्ण जीवन जीने में भी हमारी मदद करते हैं और अंत में जन्म-मृत्यु के चक्र से हमें मुक्त करके परमात्मा से हमें जोड़ देते हैं। हर व्यक्ति के कुल देवता के विपरीत, इष्ट देवता अद्वितीय माने जाते हैं और हमारी कुंडली की मदद से इष्ट देव के बारे में बताया जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हर व्यक्ति को अपने इष्ट देव की पूजा जरुर करनी चाहिये। जिस भी इष्ट देव को हम मानते हैं उनकी पूजा करना आसान होता है लेकिन मंत्रों के द्वारा इष्ट देवता की पूजा करने से हमें शुभ फलों की प्राप्ति में विलंब नहीं होता।

आपके इष्ट देवी / देवता कौन हैं?

ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत इस इष्ट देवता कॅल्क्युलेटर के माध्यम से हमने एक ऐसी व्यवस्था दी गई है जिसके आधार पर आप ये जान सकते हैं कि आपके कुलदेवता या इष्ट देवी अथवा देवता कौन है और आपको किनकी पूजा करनी चाहिए। जन्म कुंडली के अनुसार हमारा ये इष्ट देवता कॅल्क्युलेटर आपके इष्ट

को बताने में सहायक हैं जिनके आधार पर कोई भी अपने इष्ट को पहचान सकता है। जैमिनी ज्योतिष के अनुसार आत्म कारक के आधार पर जातक के इष्ट देवता का निर्धारण किया जाता है। हमारी जन्म कुंडली में जो ग्रह सबसे अधिक अंशों पर होता है उसे आत्म कारक माना जाता है। आत्म कारक नवांश वर्ग कुंडली में जिस राशि में स्थित होता है उसे कारकांश लग्न कहा जाता है। इष्ट देव का निर्धारण करने के लिए हमें यह देखना होता है कि कारकांश लग्न से बारहवें भाव में स्थित राशि कौन सी है और उसका स्वामी ग्रह कौन है, उसी से संबंधित देवी देवता ही हमारे इष्ट देवी-देवता होते हैं।

Kundali Veda

Thank You

Refer and Earn 20% Commission

For More Details Mail or Call us at +91-9693579531

Email - kundaliveda@gmail.com

www.kundaliveda.com